International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 5 May-June 2024

व्यंग्य विधा एक परिचय (अर्थ, परिभाषा एवं प्रमुख तत्व)

ललित शर्मा
शोधार्थी (हिन्दी विभाग), पेसिफिक सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय, पेसिफिक विश्वविद्यालय, उदयपुर
Corresponding Author: ललित शर्मा
Email: lalits427@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.12227439

सारांश:

व्यंग्य विधा से अभिप्राय उस अनुभव या भाव से हो जो ह्रदय को प्रसन्नचित करता है। किसी प्रकार की कोई घटानाए काव्य, प्रसंग, गद्य की विधाओं का रूप जैसे कहानी, नाटक, एकांकी जिसमें हास्य रस का पुट हो व्यंग्य कहलाता है और इससे सम्बंधित रचनाए व्यंग्य कहलाती है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारो ने अपने साहित्य के सृजन में व्यंग्य विधा को उल्लेखनीय रूप से स्थान प्रदान किया है जिसमे हरिशंकर परसाई का नाम प्रमुखता से लिया जाता है । हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में व्यंग्य में एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थान प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा कर रहा है पिछले दो दशकों में व्यंग्यकारों की संख्या में जिस प्रकार वृद्धि हुई है उसी प्रकार व्यंग को स्वतंत्रत विधा के रूप में स्थापित करने का आंदोलन चला है। जिस प्रकार विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में व्यंग्य स्तंभ प्रकाशित होकर लोकप्रिय हो रहे हैं उससे इस बात की पुष्टि होती हैं की व्यंग्य को पाठकों का विशेष प्रेम मिला है इसके कारणों में पिछले 70 वर्षों में जहां देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवेश विषाक्त बना है वही उसके बारे में सजगता भी बड़ी है। व्यंग्यकार समाज की विसंगतियों पर प्रहार करके ही नहीं रह जाता अपितु उनके कारणों की और संकेत भी देता है।

व्यंग्य की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग व '.यत' प्रत्यय लगने से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ताना कसना या कटाक्ष मारना । दूसरे शब्दों में व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है जिसके माध्यम से व्यक्ति अथवा समाज की विसंगतियों, विडबनाओं और अत्याचारों अथवा उसके किसी पक्ष को रोचक तथा हास्यास्पद तरीके से प्रस्तुत किया जाता हैं। वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर कभी–कभी ह्रदय व्यथित–चकित हो जाता है चाहे वह विसंगतियाँ सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक या धार्मिक हो ह्रदय इन विसंगतियों का विरोध करना चाहता है परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत करणो से हम इनका विरोध नहीं कर पाते और ये भावनाएँ ह्रदय के किसी भाग में संचित होने लगती है। व्यंग्यकार इन्ही संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास करता है। ऐसा ही पुनीत कार्य अपनी विभिन्न रचनाओ के माध्यम से हरिशंकर परसाई द्वारा भी किया गया है।

हरिशंकर परसाई ने व्यक्ति व समाज में उपस्थित विसंगति को लोगों के सामने लाने में व्यंग्य को सहायक माना है। उनके अनुसार, "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है।"

शरद जोशी के अनुसार, "व्यंग्य की पहचान है कि ऐसा साहित्य जो कष्ट सहती सामान्य जिन्दगी के करीब है या उससे जुड़ा है। यदि ऐसा न हो तो कहीं गड़बड़ है।"

प्रमुख शब्द :- व्यंग्य, विसंगति, रचनाए, अत्याचार, कहानी, नाटक, एकांकी

व्यंग्य विधा से अभिप्राय उस अनुभव या भाव से हो जो ह्रदय को प्रसन्नचित करता है। किसी प्रकार की कोई घटानाए काव्य, प्रसंग, गद्य की विधाओं का रूप जैसे कहानी, नाटक, एकांकी जिसमें हास्य रस का पुट हो व्यंग्य कहलाता है और इससे सम्बंधित रचनाए व्यंग्य कहलाती है। हिंदी साहित्य में अनेक साहित्यकारो ने अपने साहित्य के सृजन में व्यंग्य विधा को उल्लेखनीय रूप से स्थान प्रदान किया है जिसमे हरिशंकर परसाई का नाम प्रमुखता से लिया जाता है । हिन्दी साहित्य के आधुनिक युग में व्यंग्य में एक स्वतंत्र विधा के रूप में स्थान प्राप्त करने की प्रतिस्पर्धा कर रहा है पिछले दो दशकों में व्यंग्यकारों की संख्या में जिस प्रकार वृद्धि हुई है उसी प्रकार व्यंग को स्वतंत्रत विधा के रूप में स्थापित करने का आंदोलन चला है। जिस प्रकार विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में व्यंग्य स्तंभ प्रकाशित होकर लोकप्रिय हो रहे हैं उससे इस बात की पुष्टि होती हैं की व्यंग्य को पाठकों का विशेष प्रेम मिला है इसके कारणों में पिछले 70 वर्षों में जहां देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवेश विषाक्त बना है वही उसके बारे में सजगता भी बड़ी है। व्यंग्यकार समाज की विसंगतियों पर प्रहार करके ही नहीं रह जाता अपितु उनके कारणों की और संकेत भी देता है।

व्यंग्य से अभिप्राय :

व्यंग्य की उत्पत्ति 'अज्ज' धातु में 'वि' उपसर्ग व 'ण्यत' प्रत्यय लगने से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ होता है ताना कसना या कटाक्ष मारना । दूसरे शब्दों में व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति अथवा रचना है जिसके माध्यम से व्यक्ति अथवा समाज की विसंगतियों, विडबनाओं और अत्याचारों अथवा उसके किसी पक्ष को रोचक तथा हास्यास्पद तरीके से प्रस्तुत किया जाता हैं। वर्तमान समाज में व्याप्त अव्यवस्थाओं को देखकर कभी–कभी ह्रदय व्यथित–चकित हो जाता है चाहे वह विसंगतियाँ सामाजिक, आर्थिक,राजनीतिक या धार्मिक हो ह्रदय इन विसंगतियों का विरोध करना चाहता है परन्तु किन्हीं व्यक्तिगत करणो से हम इनका विरोध नहीं कर पाते और ये भावनाएँ ह्रदय के किसी भाग में संचित होने लगती है। व्यंग्यकार इन्ही संचित भावनाओं को व्यंग्य के माध्यम से समाज में लाने का प्रयास

करता है। ऐसा ही पुनीत कार्य अपनी विभिन्न रचनाओ के माध्यम से हरिशंकर परसाई द्वारा भी किया गया है।

व्यंग्य की परिभाषा

विभिन्न साहित्यकारों ने अपने काल खंडो के अनुसार व्यंग्य को अपने शब्दों में परिभाषित किया है, जो निम्न प्रकार से हैं:–

१) हरिशंकर परसाई ने व्यक्ति व समाज में उपस्थित विसंगति को लोगों के सामने लाने में व्यंग्य को सहायक माना है। उनके अनुसार, "व्यंग्य जीवन से साक्षात्कार करता है, जीवन की आलोचना करता है, विसंगतियों, मिथ्याचारों और पाखण्डों का पर्दाफाश करता है।"

२) शरद जोशी के अनुसार, "व्यंग्य की पहचान है कि ऐसा साहित्य जो कष्ट सहती सामान्य जिन्दगी के करीब है या उससे जुड़ा है। यदि ऐसा न हो तो कहीं गड़बड़ है।"

३) श्रीलाल शुक्ल के अनुसार, "मैने व्यंग्य को आधुनिक जीवन और आधुनिक लेखन के एक अभिन्न अस्त्र और एक अनिवार्य शर्त के रूप में पाया है।"

४) रवीन्द्रनाथ त्यागी ने महावीर अग्रवाल के साथ हुये साक्षात्कार में व्यंग्य को निम्न कथन से परिभाषित किया है, "जीवन में जो विसंगतियाँ हैं, परेशानियाँ हैं, हर्ष और उल्लास है उसको रेखांकित करने में नाटक, कविता, कहानी की भूमिका हमेशा महत्वपूर्ण रही है। व्यंग्य कभी प्रत्यक्ष और कभी परोक्ष प्रहार करता है, इसलिए विशेषकर विसंगति और विद्रूप को वह अपेक्षाकृत अधिक जिम्मेदारी से निभाता है। व्यंग्यकार की लेखनी का सशक्त और बेखौफ होना भी इसकी शर्त है।"

५) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार, "व्यंग्य वह है, जहाँ अधरोष्ठों में हँस रहा हो और सुनने वाला तिलमला उठा हो और फिर भी कहने वाले को जवाब देना अपने को और भी उपहासास्पद बनाना हो जाता है।"

६) डॉ. बरसाने लाल चतुर्वेदी के अनुसार, "आलम्बन के प्रति तिरस्कार, उपेक्षा या भर्त्सना की भावना लेकर बढने वाला हास्य व्यंग्य कहलाता है।"

७) डॉ. रामकुमार वर्मा के अनुसार, "आक्रमण करने की दृष्टि से वस्तुस्थिति को विकृत कर, उससे हास्य उत्पन्न करना ही व्यंग्य है।"

८) डॉ– प्रभाकर माचवे के अनुसार, "मेरे लिए व्यंग्य कोई पोज या अनाज या लटका या बौद्धिक व्यायाम नहीं, पर एक आवश्यक अस्त्र है। सफाई करने के लिए किसी को तो हाथ गन्दे करने ही होगें, किसी–न–किसी की तो बुराई अपने सर लेनी ही हागे

९) डॉ. शंकर पुणतांबेकर के अनुसार, "व्यंग्य युग की विसंगतियों की वैदग्ध्यपूर्ण तीखी अभिव्यक्ति है। युग की विसंगतियाँ हमारे चारो ओर के यथार्थ जगत से, वैदग्ध्य इन विसंगतियों को वहन करने वाले शैली सौष्ठव से तथा तीखापन विसंगती एंव वैदग्ध्य के चेतना पर पड़ने वाले मिले–जुले प्रभाव से संबंधित है।"

१०) डॉ. हरिशंकर दुबे ने व्यंग्य को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है– "'व्यंग्य' समाज की वस्तुगत परिस्थितियों में निहित अंतविर्रोधों की अभिव्यक्ति है। ये अंतविर्रोध सामाजिक परिस्थितियों से अनुस्युत विविध घटनाओं और विचारों से लेकर मानव के स्वभाव, क्रिया–व्यापार और आचरण में सर्वत्र उपस्थित है।"

११) स्विफट के अनुसार, "व्यंग्य एक ऐसा दर्पण है जिसमें झाँकने में अपनी छाया के अलावा और सभी का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ता है।"

व्यंग्य विधा के महत्वपूर्ण तत्व

व्यंग्य विधा के महत्वपूर्ण तत्व वे बिंदु है जिस पर किसी विधा का मूल्यांकन और परीक्षण किया जा सकता है। जिसमे उन सभी परिस्थितियों का वर्णन किया जाता है, जो इस विधा के उद्भव होने के कारक होते है। साहित्यिक आलोचकों द्वारा अन्य विधाओं के समान ही व्यंग्य के महत्वपूर्ण तत्वों पर भी समयानुकूल प्रकाश डाला गया है। साहित्यिक व्यंग्यकारो के अनुसार व्यंग्य के महत्वपूर्ण और प्रधान तत्त्व निम्न अनुसार है :–

व्यंग्य विधा में विसंगतियों की उपस्थिति

विसंगति के अभाव में व्यंग्य की कल्पना करना असंभव है। विसंगति व्यंग्य की आत्मा है। इस प्रकार विसंगति व्यंग्य विधा का एक प्रधान और आवश्यक तत्व है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है जो समाज में निवास करता है और उसका यह समाज अनेक विसंगतियों से भरा पड़ा है। समाज में व्याप्त ये विसंगतियाँ पुरातन काल से लेकर वर्तमान काल तक समान रूप से प्रचलित है ,जो व्यक्ति और समाज को अनेक रूपों से प्रभावित करती है।

व्यंग्यकार सामाजिक,राजनीतिक,शैक्षणिक,धार्मिक एवं आर्थिक विसंगतियों को आधार बनाकर अपना व्यंग्य–कर्म करता है फलस्वरूप पढ़ने वाला पाठक भी इन अत्याचारों और विसंगतियों के सम्बन्ध में सोचने को विवश हो जाता है। ये विसंगतियाँ ही व्यंग्यकार को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए प्रेरित करती है। इन विसंगतियों और अत्याचारों से समाज को मुक्त करना संभव नहीं है किन्तु इन्हें काफी हद तक व्यंग्य के प्रहारों द्वारा कमजोर अथवा कम किया जा सकता है। व्यंग्यकार अपने विचारों के माध्यम से समाज की विषमताओं को अपनी व्यंग्य रचना द्वारा समाज के सम्मुख प्रकट करता है।

सफल व्यंग्य की आवश्यकता :

एक सफल व्यंग्य की आवश्यकता साहित्यकार की सकारात्मक सोच उसे एक अच्छे व्यंग्य लेखन के लिए प्रेरित करती है, समाज से विसंगतियों और अत्याचारों को दूर करना उसका एक मात्र लक्ष्य होता है। इन्हीं लक्ष्यों और उद्देश्यों को केंद्र में रखकर वह अपना रचना संसार बनाता है वह उन सभी विसंगतियों का पूर्णरूप से विरोध करता है जो समाज की उन्नति में बाधक है जो व्यंग्यकार अपनी व्यंग्य रचना द्वारा सांप्रदायिकता समाज में व्याप्त अंधविश्वास, कुरीतियाँ गरीबी, बेरोजगारी वं रूढ़िवादिता का विरोध करे वही व्यंग्य सफल व्यंग्य माना जाता है अन्यथा वह व्यंग्य मात्र हास्यविनोद बनकर रह जाता है। व्यंग्यकार अपने व्यंग्य के माध्यम से निराश्रित, शोषित, कमजोर दीन–हीन जनता की दशा और दिशा की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करता है।

नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा

मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का होना नितांत आवश्यक है नैतिक मूल्यों के अभाव में मनुष्य पतन की और अग्रसर हो जाता है एक व्यंग्य साहित्यकार के अनुसार इमानदारी, सहिष्णुता, समाज के प्रति उत्तरदायित्व की भावना मनुष्य के प्रधान मानवीय और नैतिक गुण है जिनके अभाव में सामाजिक विकास की कल्पना करना भी व्यर्थ है व्यंग्यकार अपनी

व्यंग्यात्मक चेतना द्वारा भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, अशिक्षा पर व्यंग्य कर नैतिक मूल्यों को पुनः स्थापित करने का भरपूर प्रयास करता है व्यंग्य साहित्य शिक्षा, राजनीति या धार्मिक सभी क्षेत्रों में आई अनावश्यक विसंगति और अत्याचारों को समाज के समक्ष पेश करने का भरपूर प्रयास करता है।

अनैतिक पक्षों को अपने साहित्य में स्थान देकर व्यंग्यकार समाज एवं पाठकों के लिए नैतिक एवं मानवीय मूल्यों की रक्षा की भावना जागृत करने का प्रयास करता है अतः स्पष्ट है कि नैतिक एवं मानवी मूल्यों की रक्षा के बिना व्यंग्य शाश्वत रूप में स्थापित नहीं हो सकता है।

गंभीर चिंतन

गंभीर चिंतन ही व्यंग के उद्‌भव का एक प्रमुख और आवश्यक तत्व है किसी भी विषय की गंभीरता साहित्यकार को व्यंग्य लेखन के लिए प्रेरित और उत्साहित करती है वही उसका गंभीर चिंतन उसको उसके लक्ष्य तक पहुंचाने में सहायता प्रदान करता है जहां वह स्वयं को चारों ओर से सामाजिक विसंगतियों और अत्याचारों से घिरा हुआ महसूस करता है। गंभीर व गहन चिंतन द्वारा व्यंग्यकार अच्छे व्यंग की रचना करने में सहायक होता है जिससे वह समाज में परिवर्तन लाने के लिए एक अच्छे नेतृत्व को जन्म देता हैं।

पात्रों पर निर्भरता

एक सफल व्यंग्यकार अपनी व्यंग्य रचना में पात्रों का चयन बड़ी सावधानी से करता है क्योंकि उसके व्यंग्य लिखने का उद्देश्य उसके पात्रों के इर्द–गिर्द ही केंद्रित होता है व्यंग्यकार सामाजिक विसंगतियों के अनुरूप अपने भिन्न–भिन्न पात्रों का चयन करता है व्यंग्यकार कभी–कभी आधुनिकता का सहारा लेता है तो कभी पौराणिक पात्रों के माध्यम से समाज की विसंगतियों और अत्याचारों को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास करता है इस प्रकार उपयुक्त पात्रों का चयन व्यंग्य विधा का आवश्यक और प्रधान तत्व है।

पतनोन्मुख व्यक्ति और समाज

समाज और व्यक्ति का पतन व्यंग्य साहित्यकार की रुचि का विषय होता है क्योंकि यह पतनोन्मुख जगत उसे दुख एवं पीड़ा पहुंचाता है भारत की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए संक्षेप में कहा जा सकता है कि आधुनिक लोकतांत्रिक समाज में परिवार, पाठशाला, समुदाय, शासन, जनसंचार के साधन, राजनीतिक दल, दबाव समूह आदि बालको और वयस्को को उसके राज्य में प्रचलित संस्कृति से परिचित करवाते हैं और उन्हें राजनीति की ओर ले जाते हैं। साहित्यकार भी समाज अथवा देश की एक इकाई है। अतः प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था का उस पर सीधा प्रभाव पड़ता है। संवेदनशील होने के कारण साहित्यकार पर पड़ने वाला प्रभाव सामान्य व्यक्ति की अपेक्षा बहुत अधिक होता है और इसी अनुपात में उसकी प्रतिक्रिया भी तीव्रता लिए होती है। राजनीतिक परिवेश का प्रभाव अनिवार्यतः उसकी रचना में प्रतिबिंबित होता है। अर्थात समकालीन राजनीतिक बोध की शुभ–अशुभ स्थितियां साहित्यकार को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से प्रभावित करती है। साहित्यकार का साहित्य से अटूट संबंध रहा है और कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। दर्पण की यह विशेषता होती है कि वह जैसा है वह वैसा ही दिखाई देता है। साहित्य में भी समाज में जो घटित हो रहा होता है उसे वैसा ही प्रस्फुटित करता है।

किसी भी वस्तु, द्रव्य, भौतिक जीव का जन्म होते ही समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है, ठीक उसी प्रकार हिंदी साहित्य में भी परिवर्तन होते रहते हैं यह परिवर्तन समाज में हो रही राजनीति, सामाजिक और आर्थिक हलचल का ही परिणाम होता है। अपनी लेखनी के द्वारा व्यंग्यकार अपनी इसी व्यथा को जग–जाहिर करने का प्रयास करता है।

व्यंग्य विधा में भाषा शैली :

व्यंग की भाषा उसके व्यंग्य प्रहार की क्षमता को दोगुनी करने में सहायक है व्यंग विधा में विसंगतियों और अत्याचारों के प्रति सहानुभूति नहीं अपितु कठोर व तीक्ष्ण भाषा का प्रयोग किया जाता है भाषा शैली में खास किस्म का अपनापा है जिससे पाठक यह महसूस करता है कि लेखक उसके सामने ही बैठा है। व्यंग्यकार मिथकीय शैली, रेखाचित्र शैली, पत्रात्मक शैली, फैंटेसी शैली, पैरोडी शैली का भी अपनी रचनाओं में सफल प्रयोग करता है व्यंग्यकार अपनी व्यंग्यात्मक भाषा शैली के माध्यम से पाठकों के हृदय पर सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों और अत्याचारों पर कटाक्ष की अमिट छाप छोड़ता है।

व्यंग्य विद्या में आलोचना

व्यंग का अस्तित्व आलोचना पर निर्भर करता है आलोचना जितनी तेज व कटाक्ष भरी होगी व्यंग्य उतना ही प्रभावशाली होगा। व्यंग में समाज में व्याप्त सामाजिक धार्मिक आर्थिक राजनीतिक विसंगतियों व अत्याचारों की आलोचना की जाती है जो प्राय किसी निश्चित उद्देश्य को लेकर की जाती है।

व्यंग्य विधा में बौद्धिकता

व्यंग विधामें बौद्धिकता तत्व होना अनिवार्य है।व्यक्ति अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार सामाजिक राजनीतिक विसंगतियों व अत्याचारों और विषमताओं को पहचान कर उस पर अपनी व्यंग दृष्टि रखता है अच्छे व्यंग्य लेखन शैली के प्रधान तत्वों में तर्क और ज्ञान का होना महत्वपूर्ण है, जो व्यंग्यकार को उसके निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करता है। इस प्रकार यह सभी तत्व व्यंग्य सृजन के लिए आवश्यक तत्व है उपरोक्त तत्वों के सहयोग से ही एक अच्छी श्रेष्ठ व ओजपूर्ण व्यंग रचना का निर्माण संभव है, उक्त तत्वों के अभाव में व्यंग विधा का लेखन असंभव है ।

संदर्भ ग्रन्थ –

1 परसाई, हरिशंकर, परसाई रचनावली–6, प्रकाशन राजकमल, नयी दिल्ली–2000 पृष्ठ –242
2 जोशी, शरद, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना भूमिकाँ, प्रकाशन ज्ञान भारती दिल्ली–1980
3 रत्नाकर, श्री जन्नाथदास, बिहारी रत्नाकर, मलिक एंड कंपनी, 2013 पृष्ठ –146
4 परसाई, हरिशंकर, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचना, प्रकाशन ज्ञान भारती दिल्ली–1977 पृष्ठ आप(लेखक की बात)
5 कोहली, नरेन्द्र, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाँ, प्रकाशन ज्ञान भारती दिल्ली–1977 पृष्ठ –7
6 तिवारी, बालेंदु शेखर हिन्दी का स्वातंर्त्योतर हास्य और व्यंग्य, प्रकाशन अन्नपूर्णा कानपुर 1988 पृ. 43
7 जैन, वन्दना, बालेन्दु शेखर तिवारी का व्यंग्यकर्म–चिंतन और सृजन, पृष्ठ –5
8 सिंह, सत्यव्रत , काव्य प्रकाश, प्रकाशन चोखम्भा सौरभ भारती, 2012 पृष्ठ –13
9 अमृतराय, मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाँ, 1985 पृष्ठ – 5
10 दुबे, अश्विनी कुमार, शहर बंद है, प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ वाणी पृष्ठ –7 (ये रचनाँ,)

11 आनंदवर्धन, आचार्य, ध्वन्यालोक (प्रथम अध्याय) प्रकाशन पृष्ठ –102
12 अमृत संदेश (समाचार पत्र) 8 फरवरी 1987 ई–, पृष्ठ –5
13 रावत, आशा, कवि और व्यंग्यकार रवीन्द्रनाथ त्यागी, प्रकाशन हंसा 2012 पृष्ठ –285
14 ठाकुर 'दादा', श्रीराम, मेरी इक्यावन व्यंग्य रचनाँ,, पृष्ठ –5 (लेखक की ओर से)
15 शर्मा, ज्ञान प्रकाश, हिन्दी की हास्य–व्यंग्यमयी कविता का सांस्कृतिक विवेचन, पृष्ठ 20
16 ''बात''सामयिक,मार्च 1997,सं.कन्हैयालाल औझा,डॉ. बालेंदु शेखर तिवारी का लेख ''हिन्दी व्यंग्य का वर्तमान स्वरूप''
17 जोशी शरद एक यात्रा, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2018, पृ. 138